ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 154 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका मार्च 2021


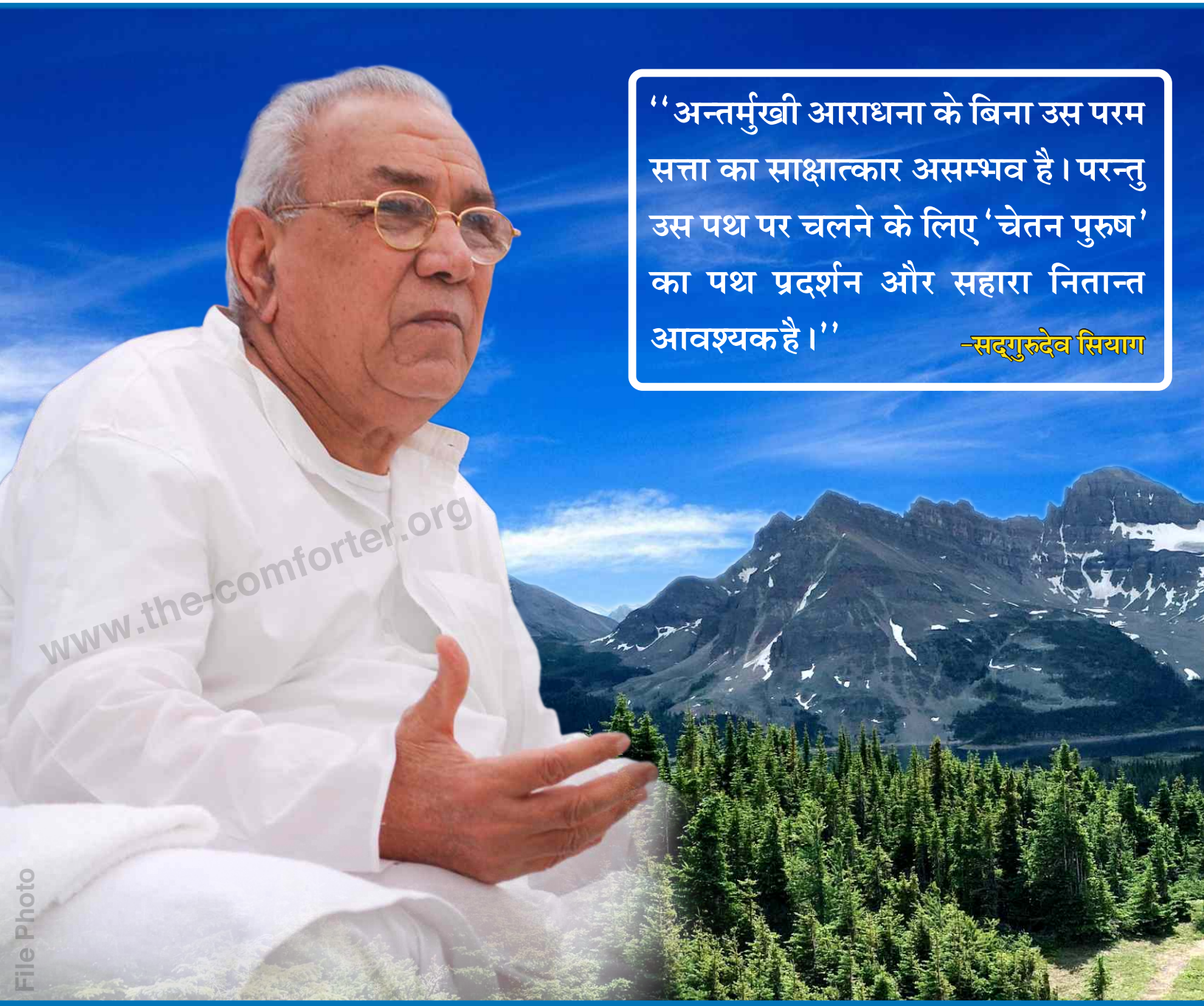


"अन्तर्मुखी आराधना के बिना उस परम सत्ता का साक्षात्कार असम्भव है। परन्तु उस पथ पर चलने के लिए 'चेतन पुरुष' का पथ प्रदर्शन और सहारा नितान्त आवश्यक है।"

–सद्गुरुदेव सियाग


www.the-comforter.org


क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

**प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?**

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। ( अपने घर बैठे ही )

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

# एकाग्रता और करुण पुकार

''मैं जिस सत्ता में कुछ भी विश्वास नहीं रखता था, मृत्यु भय के कारण सहर्ष जैसा बताया, वैसा करने को तैयार हो गया। उस समय की मेरी मानसिक स्थिति ऐसी थी कि एक तरफ तो मृत्यु मुँह बाये खड़ी थी, दूसरी तरफ उस अदृश्य शक्ति से प्राण रक्षा की करुण पुकार कर रहा था। ऐसी स्थिति में 'एकाग्रता' और 'करुण पुकार' कैसी होगी, आसानी से समझी जा सकती है।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ( ब्रह्मलीन )

वर्ष: 13 अंक: 154 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका मार्च 2021

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर ( राज. ) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

## अनुक्रम

सम्पादकीय- 'गुरु आज्ञा'.....4
भारत का सिद्धांत .....6
कहानी- गुरु आज्ञा या मन की मौज .....7
साधना विषयक बातें .....10
मानस की नीरवता .....13
सिद्ध-योगियों की महिमा .....16
उन्मुक्त जीवन या सालों की दासता .....19
रूपान्तरण (Transformation) .....22
ध्यान कार्यक्रम का आयोजन .....25
What is salvation? Why is it necessary to attain it? .....26
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से... .....32
योग के आधार.....34
धर्म .....36
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण .....37
ध्यान की विधि .....38

# गुरु आज्ञा

आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने में, एक सच्चे साधक के लिए अपने गुरुदेव की आज्ञा ही शिरोधार्य होती है।

भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि सद्गुरु के प्रति गहरी प्रीति और समर्पण भाव से आज्ञा का पालन साधक के लिए विकास के सर्वोत्तम सोपान तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता है।

द्वापर युग में भगवान् श्री कृष्ण के गुरु श्री संदीपनी ऋषि ने अपने गुरु की प्रत्येक आज्ञा का अक्षरशः पालन किया।

एक बार संदीपनी ऋषि के गुरु ने उनसे कहा कि वह उनके बेटे को कुएँ में फेंक दें। तब संदीपनी ने बिना एक पल सोचे तुरंत ही गुरु के पुत्र को कुएँ में डाल दिया। फिर थोड़ी देर पश्चात उनके गुरु ने अपने दूसरे शिष्यों से उनकी शिकायत की कि संदीपनी ने उनके बेटे को कुएँ में डाल दिया। यह सुनकर संदीपनी के गुरुभाईयों ने उनकी जमकर पिटाई की। लेकिन संदीपनी ने यह नहीं कहा कि गुरुदेव के कहने पर उन्होंने वैसा किया। यह घटना गुरु आज्ञा पालन का एक उत्तम उदाहरण है। फिर समय आने पर संदीपनी को गुरुपद मिला और उन्होंने भगवान् श्री कृष्ण को दीक्षा दी।

गुरुनानक देव जी महाराज के ग्रंथ में गुरु आज्ञा का बड़ा बखान है। गुरु नानकदेव जी के शिष्यों का अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण था।

कहा जाता है कि एक बार गुरुनानक देव जी अपने शिष्यों से घिरे हुए एक पेड़ के नीचे बैठे थे। शाम हो चुकी थी और उनके चेले भूखे-प्यासे थे। साथ ही बहुत जोर का तूफान भी चल रहा था। तब नानक जी ने पहले अपने बेटों से खाना खोज लाने के लिए कहा। बेटों ने यह सोच कर कि इस आंधी तूफान में कहाँ खाना मिलेगा, जाने से मना कर दिया। तब नानक देव जी ने अपने एक शिष्य से कहा। उसने आज्ञा मान ली

www.the-comforter.org

और पूछा, ''मैं किस तरफ जाऊँ गुरुदेव ?'' नानक देव जी ने कहा, '' हम जिस पेड़ के नीचे बैठे हैं, बस उसी से खाना माँग लो। वह सब कुछ दे सकता है।'' कहा जाता है कि शिष्य ने ऐसा ही किया और सब लोगों ने भर पेट खाना खाया।

स्वामी विवेकानंद के गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस जी थे। विवेकानंद जी ने अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए सनातन धर्म को विश्व में फैलाया।

स्वामी जी ने अपने भौतिक जीवन के सब कार्यों से अलग हटकर, अपने सद्गुरुदेव की आज्ञा को सर्वोपरि महत्ता दी और आज जग जाहिर है कि उनकी वाणी विदेशी भूमि पर अमर हो गई।

आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग ही है-''**गुरु आज्ञा का पालन**'' और कुछ नहीं। **शिष्य को गुरु कहे सो करना है, न कि गुरु करे सो करना।**

नाथ परंपरा में बाबा श्री गंगाईनाथ जी महाराज ने अपने सिद्धगुरुओं से जो आलोक पाया, वो समय आने पर, कैलाशवासी परशिव से आरंभ हुए ज्ञान को बाँटने का कार्य वापस कल्कि अवतारी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को सौंपा। बाबा का आदेश था कि इस ज्ञान को पूरे विश्व में बांटना है। जिसको पूरा करने के लिए गुरुदेव ने रेलवे की नौकरी से सात साल पहले सेवानिवृति ली और गुरु आज्ञा पालन में लग गए।

गुरुदेव ने स्पष्ट कहा है कि-'' मेरे लिए तो गुरु ही सर्वोपरि है।''

इस अमूल्य जीवन का पल पल कम होता जा रहा है। इसलिए इस भूमण्डल पर जिन सौभाग्यशाली साधकों को गुरुदेव का मंत्र मिला है, वे उसके मूल्य को पहचानें, और एक पल गवाँए बिना अनवरत आराधना पर जोर दें।

गुरुदेव के परम ज्ञान को समझने के लिए उनके प्रवचनों को सुनिए, जो उनकी वेबसाइट और यूट्यूब पर उपलब्ध हैं।

गुरुदेव की असीम कृपा दृष्टि सदा बनी रहे, और साधक गुरुदेव की आज्ञा में रहते हुए, इस पथ पर आगे बढ़ें, यही प्रार्थना है।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

# भारत का सिद्धांत-

# ''अहिंसा परमोधर्मः

भारत का सिद्धान्त है- ''अहिंसा परमोधर्मः।'' इस देश और इस धर्म को हिंसा से कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द जी ने ब्रुकलीन में 1895 में कहा था- ''भारत का संदेश है कि शांति, शुभ, धैर्य और नम्रता की अन्त में विजय होगी।

www.the-comforter.org

क्योंकि वे यूनानी कहाँ हैं, जो एक समय पृथ्वी के स्वामी थे? समाप्त हो गये। वे रोमवाले कहाँ हैं, जिनके सैनिकों की पद्चाप से संसार काँपता था? मिट गये। वे अरब वाले कहाँ हैं, जिन्होंने पचास वर्षों में अपने झण्डे अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महासागर तक फहरा दिये थे।

और वे स्पेन वाले करोड़ों मनुष्यों के निर्दयी हत्यारे कहाँ हैं? दोनों जातियाँ लगभग मिट गईं। परन्तु अपनी संतान की नैतिकता के कारण यह दयालु जाति कभी नहीं मरेगी, और वह फिर अपनी विजय की घड़ी देखेगी।।''

-स्वामी विवेकानन्द

कहानी

# गुरु आज्ञा या मन की मौज

बहुत सीधी-साधी सी बात आज के मानव को ना तो जल्दी समझ आती है और ना ही रास आती है।

एक बार की बात है एक महात्मा थे, सीधे-साधे सरल स्वभाव के। वह नीमपुरा गाँव के बाहर बरगद के एक पुराने विशाल वृक्ष के नीचे अपना डेरा डालकर भजन-साधना में लीन रहते थे। उनके पास अनेक जिज्ञासु आया करते थे। जब कोई अध्यात्म जिज्ञासु आ जाता तो वह उसे इस मार्ग की बारीकियों को समझाकर दीक्षा देते थे। इसमें कोई जाति, धर्म आदि का भेद नहीं रखते थे और ना ही कोई रूपये पैसे की दक्षिणा मांगते थे। जो मिल जाता उसी में खुश और संतुष्ट रहते थे।

एक दिन रूपमल नाम का एक व्यक्ति उनके पास आया। महात्मा ने पूछा - कहाँ से आए हो? वो बोला - बाबा रहने वाला तो मैं इसी गाँव का हूँ पर आजकल काम-धंन्धे के सिलसिले में शहर में रहता हूँ। बाबा बोले अच्छी बात है, अच्छे काम करो, अच्छा फल मिलेगा। रूपमल बोला - बाबा आपसे दीक्षा लेनी है। क्या करना होगा?

बाबा ने कहा- बेटा! मैं बहुत ही सीधी, सरल सी साधना बताता हूँ जिसे करने से तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। तुम्हें केवल मंत्र जाप और सुबह-शाम ध्यान ही करना है, बाकि मैं संभाल लूंगा। रूपमल को बात पसंद आई। बोला- ठीक है बाबा! और वह दीक्षा ले कर चला गया। थोड़े दिनों बाद वह फिर बाबा के पास आया और बोला कि बाबा, साधना में मन नहीं लग रहा है। और क्या करूं जो मन लग जाए? बाबा ने कहा बेटा, बस जो बताया है उसे ही पूरी निष्ठा के साथ करता चल, एक दिन मन भी लग जाएगा। यह सुनकर वह वहाँ से चला गया।

शहर जाने से पहले वो एक बार फिर अपने गुरु से मिलने आया। बाबा ने उसको आशीर्वाद देकर पूछा किस शहर में रहते हो। वो बोला- मैं मैनापूरी में काम करता हूँ। बाबा ने कहा अरे! वहाँ तो मेरे बहुत से शिष्य हैं। यह सुनकर वह खुश हुआ और अपने गुरु से आशीर्वाद लेकर मैनापूरी के लिए चल पड़ा। अब रूपमल ने मैनापूरी पहुँकर काम धन्धे के साथ-साथ गुरु के शिष्यों को ढूंढना शुरू किया। धीरे-धीरे कर के काफी शिष्य मिल गए। अब वो अक्सर आपस में मिलने लगे। मिलने पर वे अपनी अनुभूतियों की चर्चा करते और कहते कि बहुत अच्छा सत्संग हुआ, बहुत आनन्द आया।

www.the-comforter.org

सभी शिष्य अब तक रूपमल की मीठी-मीठी बातों से बहुत प्रभावित हो चुके थे।

इसी तरह मिलते-जुलते एक दिन रूपमल के मन में एक ख्याल आया। बोला- क्यों ना हम एक साथ ध्यान करा करें? कुछ शिष्यों ने विरोध किया और कहा गुरुदेव ने तो हमें कभी एक साथ ध्यान करने को नहीं बोला है। रूपमल ने बहुत ही दार्शनिक अंदाज में कहा - ये सही बात है कि गुरुदेव ने नहीं कहा है पर मुझे ऐसा लगता है कि इससे हमें ज्यादा जल्दी और ज्यादा शक्ति को अपने अन्दर उतार सकने की क्षमता मिलेगी। सामूहिकता में शक्ति होती है। यह कहकर उसने बाकी शिष्यों पर अपनी बात का जादू चला दिया। बस ! अब वे सब मिलकर, हफ्ते में दो दिन तो अपने जीवन में हुई अनुभूतियों के बारे में बातचीत करते और इसे सत्संग कहते और 3 दिन सामूहिक ध्यान करने लगे।

ऐसे ही कुछ दिन गुजरे थे कि एक दिन रूपमल बोला कि उसको किसी ने बताया है कि अगर ध्यान एक निश्चित समय पर करें तो और फायदा होगा। वो बोला कि जिसने मुझे ये बात बताई है वो अपने को गुरुदेव का परम शिष्य कहता है। सब इस बात से प्रभावित हो गए और अब गुरुदेव की सीधी सी साधना में एक और कड़ी जुड़ गई कि प्रतिदिन एक निश्चित समय पर ही ध्यान करना है।

तभी एक दिन रूपमल बोला कि मुझे तो लगता है कि दिन में तीन-चार बार ध्यान करने में कोई हर्ज नहीं है। फिर किसी शिष्य ने कहा पर गुरुदेव ने तो केवल दो बार ध्यान करने को कहा है। रूपमल बोला वो ठीक है पर तीन-चार बार ध्यान करने से कोई नुकसान थोड़े ही हो जाएगा। और अब इस सीधी सी साधना में एक कड़ी और जुड़ गई- तीन-चार बार ध्यान की। अब तक रूपमल इस समूह का मुखिया बन चुका था। हर बात पर शिष्य उसी की राय लेते और उसी के कहे अनुसार करते थे।

ये सारे सत्संगी शिष्य अब अपने को बहुत ही आध्यात्मवादी समझने लगे थे। गुरुदेव की बताई हुई सीधी सी साधना में उन्होंने बहुत से आविष्कार जो कर डाले थे। रही सही कसर तब पूरी हो गई जब एक दिन रूपमल बोला कि ध्यान की अवधि बढ़ा देनी चाहिए और कुछ नहीं समझ में आए तो अपने अन्दर के गुरु से पूछ लो, वो जितनी देर के लिए कहे उतनी देर का ध्यान कर लो। अब सभी शिष्यों ने गुरु के आदेश को किनारे रख कर अपनी मन मर्जी से ध्यान की अवधि बढ़ा ली।

रूपमल ने अब गुरुदेव के नाम पर हर महीने की पूर्णिमा के दिन एक कथा का आयोजन कराना भी शुरू कर दिया। असल में अब रूपमल को सभी जानने लगे थे। रूपमल को मन ही मन सभी से मिलने वाला यह मान-सम्मान अच्छा लगने लगा था और इसी लिए वह कोई न कोई युक्ति लगाकर सब के बीच अपने को केन्द्र बिंन्दु बनाए रखना चाहता था। यहाँ तक कि अब उसने नये जुड़ने वाले साधकों के लिए एक दिन का एक विशेष सत्र भी आयोजित करना शुरू कर दिया था। सभी नए

www.the-comforter.org

साधक यह समझने लगे कि रूपमल की बताई हुई सभी बातें भी गुरुदेव की साधना का अभिन्न अंग हैं।

सही है ना कि सीधी-साधी बाते जल्दी से समझ नही आतीं आजकल किसी को ! देखा, कैसे गुरु द्वारा बताई हुई सीधी साधी साधना को देखते ही देखते कुछ शिष्यों ने कितना जटिल बना डाला !

एक बार रूपमल ने सोचा कि सबको लेकर गुरुदेव के पास जाना चाहिए। सभी शिष्य उसके नेतृत्व में गुरु के पास पहुँचे और उनको प्रणाम किया।

रूपमल ने अपनी प्रशंसा सुनने के भाव से बताना शुरू कर दिया। बोला- गुरु जी आपने तो बताया था कि केवल मन ही मन मंत्र जपो और दो समय ध्यान कर लो, आगे आप सम्भालेंगे..... पर हमारे भी तो कुछ कर्तव्य होते हैं ना इसलिए अब हम-

1. अपनी अनुभूतियों की चर्चा करते हुए सत्संग करते हैं।

2. रोज एक निश्चित समय पर भी ध्यान करते हैं।

3. पूर्णिमा के दिन कथा का आयोजन करते हैं।

4. नए और पुराने साधकों के लिए अलग-अलग साधना शिविरों का आयोजन करते हैं।

रूपमल आगे कुछ कहता कि इतने में गुरु ने कहा- बेटा ! तुमने तो सीधी सी एकाकी साधना को इतने सारे बाहरी आडम्बरों में बांध दिया ! तुम्हें अब मेरी जरूरत नहीं है। जाओ यहाँ से।

रूपमल बोला- गुरु जी ! हम तो आपके शिष्य हैं। गुरु जी बोले- नहीं बेटा ! तुम तो खुद ही गुरु बन बैठे हो।

रूपमल को समझ नहीं आया कि क्या बात हो गई। वो तो अपनी प्रशंसा सुनने की उम्मीद से आया था।

तब वहीं पर पास में बैठे, गाँव के एक सीधे सरल स्वभाव के लुहार ने, जो गुरु का शिष्य था उन्हें समझाया। वह बोला- रूपमल जी, आपने जितनी बातें अभी बताईं, उसमें से क्या एक भी बात गुरु जी ने हमें करने को बोली है ? रूपमल बोला- नहीं बोलीं, पर ये सभी तो साधना के लिए अच्छी हैं। लुहार बोला- कोई बात कितनी भी अच्छी क्यों ना हो, अगर अपने गुरु ने उसे करने का आदेश नहीं दिया है तो वो हमारे लिए व्यर्थ है, अर्थहीन है।

वह बोला- रूपमल जी, गुरु-शिष्य परम्परा में गुरु की आज्ञा ही सब कुछ होती है। आपने तो उनकी आज्ञा की ही धज्जियाँ उड़ा दीं। अब जब आप ही ज्ञान बाँट रहे हो तो आप ही ज्ञाता हो गए ना ? फिर आप को गुरु की क्या आवश्यकता ?

सब खामोश थे।

गुरु-शिष्य परम्परा में केवल और केवल गुरु आज्ञा ही शिरोधार्य होती है। उसके आगे हम जो भी करते हैं वह सब संसार के प्रपंच हैं, माया का जाल है, मन की मौज है। अगर इस मानव जन्म को सफल बनाना है तो केवल गुरु आज्ञा में रहते हुए केवल अपने कल्याण की सोचें, औरों का कल्याण करने के लिए गुरुदेव हैं। खुद गुरु बनने की कोशिश ना करें।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

इन सब बाधाओं को देखकर विचलित मत होओ। भीतर जाकर स्थिर भाव से देखती जाओ, भीतर से ही ज्ञान बढ़ेगा। श्रीमां की शक्ति ही धीरे-धीरे इन सब बाधाओं को दूर कर देगी।

असली बात यह है कि कर्म करते समय अहंकार या बाह्य प्रकृति के वश में न हो जाओ। यदि ऐसा होता है तो फिर काम साधना का अंश नहीं रह जाता, वह हो जाता है एक सामान्य काम की तरह। काम भी समर्पित भाव से अंदर से करना होता है।

प्रश्नः- आज कुछ दिनों से दुःख, निरानन्द और हताशा भरे विचार और प्रेरणाएँ आनी शुरू हुई हैं। मैं सिर्फ छोटे-से शिशु के समान शक्ति को पुकारती हुई चल रही हूँ। इससे देखती है कि कुछ समय बाद सब कुछ वसक ( सूखे ) पत्तों की तरह झड़कर गिर गये हैं। और तुम्हारी शांति, प्रकाश, पवित्रता और आनंद उतरने लगे हैं।

उत्तरः- इस तरह reject ( परित्याग ) कर देने से, फेंक देने से, वे सब suggestions ( सुझाव नष्ट हो जाते हैं-उनका जोर क्रमशः कम होता जाता है और अंत में वे निष्प्राण हो जायेंगी।

प्रश्नः- सिर्फ बाधा को लेकर ही उद्विग्न हो उठी थी, उसी के बारे में बहुत सोच रही थी इसीलिये इतना दुःख-कष्ट और आघात मिला। तुम्हें और

www.the-comforter.org

नहीं बिसराऊंगी।

उत्तर:- यही अच्छा है। यदि ऐसा कर सको तो बाधा, बाधा की तरह नहीं आयेगी वरन् रूपांतर की सुविधा के लिये आयेगी।

इस सब गड़बड़-झमेले के बारे में एक बात कहनी आवश्यक हो गयी है-तुम किसके साथ घनिष्ठता रखती हो या ज्यादा मिलती-जुलती हो इस विषय में इस समय बहुत सावधान रहो। जैसे भोजनालय में 'थ' और 'ज' हैं। 'थ' के अंदर अशुद्ध शक्तियाँ खुलकर, खेल खेलती हैं, उस समय उसके शरीर में एक ज्वाला उठती है और मति उलट जाती है। Hunger-Strike (भूखा हड़ताल) करके जबदरस्ती शक्ति से अपनी इच्छा मनवाना चाहता है, विद्रोह करके हमारी बुराई तक करता है, साधिकाओं के मन में हमारे प्रति असंतोष पैदा करने की चेष्टा करता है। मैंने देखा है कि 'थ' के साथ जो ज्यादा मेलजोल बढ़ाते थे उनके अंदर भी पेट में अग्निज्वाला की गड़बड़ और मतिभ्रष्ट हो जाने की अवस्था संक्रामक रूप से आरंभ हुई थी।

'ज' के साथ उतना नहीं होता फिर भी 'थ' के पास जाने से अहंकार और अशुद्ध अवस्था सहज ही उठ खड़ी होती हैं। शरीर में भी अग्निज्वाला और बहुत-सी गड़बड़ें होती हैं। तुम्हारी गड़बड़ की, unsafe condition (असुरक्षित अवस्था) की feeling (भावना), और शरीर में कटे घाव पर लाल मिर्च लगने की-सी feeling (संवेदना) उनकी उसी अशुद्ध शक्ति का धावा बोलने का प्रयास हो सकता है। इसीलिये कहता हूँ सावधान रहो, शक्ति के सिवाय और किसी के प्रति अपने को open न करो (मत खोलो)। यह बात सिर्फ तुम्हारे लिये ही लिख रहा हूँ, और किसी को नहीं बताना। प्रणाम के समय श्रीमां देख रहीं थीं कि तुम्हारे अंदर कुछ गड़बड़ की feeling क्यों हो रही है। प्रकृति की बाधाएँ तो सबमें ही होती है-लेकिन उनसे गड़बड़ न हो इसके लिये सजग रहना अच्छा है।

www.the-comforter.org

यह अनुभूति बहुत अच्छी है। प्रणाम के समय शक्ति भीतर से क्या दे रही हैं वही feel (अनुभव) करना चाहिये-सिर्फ बाहरी appearance (दिखावे) को देखकर लोग कितना गलत समझते हैं, भीतरी दान लेना भूल जाते हैं या ले नहीं सकते।

बहुत बार पीछे से इस तरह का आक्रमण होता है लेकिन शक्ति और चेतना वहाँ हों तो वह प्रवेश नहीं कर सकता। सफेद कमल का अर्थ है कि वहाँ श्रीमाँ की चेतना प्रकट हो रही है।

पीछे की तरफ है चैत्य पुरुष का स्थान और वहाँ जितने भी केंद्र हैं, जैसे Heart centre, Vital centre, Physical centre (हृदय केंद्र, प्राण-केंद्र और भौतिक केंद्र) जहाँ मेरुदण्ड के

साथ मिलते हैं, वहाँ उनकी अवस्थिति है। इसीलिये इस पीछे की चेतना की अवस्था बहुत Important ( महत्त्वपूर्ण ) है।

यह जो feeling होती है ( महसूस होता है ) कि शक्ति दूर है, यह धारणा गलत है। शक्ति तुम्हारे पास ही है लेकिन जब बाहरी मन पर प्राण का पर्दा पड़ जाता है तो ऐसी धारणा बनती है। जो एक बार अंदर ही अंदर शक्ति की गोद में रहता है उसके लिये इस पर्दे को सरकाना मुश्किल नहीं होता।

एक बात याद रखो कि शक्ति दूर नहीं जाती, हमेशा तुम्हारे पास भीतर ही होती हैं-जब बाहरी प्रकृति में किसी भी तरह की चंचलता होती है तब वह एक लहर की तरह भीतर सत्य को ढक देती है, इसीलिये ऐसा महसूस होता है। अंदर रहो, अंदर से ही सब देखो, करो।

ये सभी ठीक हैं। बाह्य अहंकार और अज्ञान हैं-असत्य। बाहरी तुम्हारा निजी नहीं, आत्मा का नहीं, ऐसा समझकर reject ( अस्वीकार करना होता है। इसलिये भीतर रहना होगा, वहाँ से सब समझना, देखना, करना होगा।

जब हम बाहरी भौतिक चेतना में रहते हैं तब इस तरह की साधना-शून्य, अनुभूति शून्य अवस्था होती है-ऐसा सबके साथ होता है। ऐसा न हो इसका एकमात्र उपाय तुम्हें बताया था-भीतर रहना, बाहरी अज्ञान, अहंकार और साधारण प्राणवृत्तियों के अधीन न हो भीतर चैत्य लोक से इन सबको देखना, परिहार करना। भीतर से ही शक्ति धीरे-धीरे इन सब अंधकारमय भागों को आलोकित और रूपांतरित करती है। जो ऐसा करते हैं उन्हें बाधा भी बाधा नहीं दे सकती। बहुत-से लोग ऐसा नहीं करते, जब तक भौतिक के ऊपर से आलोक, शक्ति इत्यादि नहीं उतरते वे भौतिक में ही निवास करते हैं।

इस बात का उत्तर में पहले ही दे चुका हूँ। भीतर रहो, बाहरी आँख से नहीं, भीतर से सब देखो। चेतना बहिर्मुखी होने से सोचने करने में बहुत भूलें हो सकती हैं। भीतर रहने से चैत्य क्रमशः प्रबल होता है, चैत्य ही सत्य को देखता है, सब कुछ सत्यमय कर देता है।

इस चिंता और भय के बदले यह निश्चयता और श्रद्धा रखनी चाहिये कि जब एक बार भीतर शक्ति के साथ तार जुड़ गया है तब चाहे हजार बाधाएँ आयें या बाहरी प्रकृति के कितने ही दोष और असंपूर्णताएँ हों, मेरे अंदर शक्ति की विजय अवश्यंभावी है अन्यथा हो ही नहीं सकता।

जब यह शून्यावस्था आती है तब मन को खूब शांत रखो, बाहरी प्रकृति में उतारने के लिये गुरु की शक्ति और आलोक को पुकारो।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# मानस की नीरवता

**''अपनी पराशक्ति और मानसिक नीरवता से लैस साधक क्रमशः देखेगा कि बाहर से वह अप्रवेश्य नहीं है, वह ग्रहण भी करता है, सब तरफ से ग्रहण करता है – दूरी अवास्तविक रुकावट ही है, दूर कोई भी नहीं है, चला भी कोई नहीं गया। सब कुछ एकत्र एक ही काल में है– और दस हजार किलोमीटर की दूरी से वह अपने मित्र की चिन्ताओं, व्यक्ति के क्रोध, भाई की पीड़ा को साफ प्राप्त कर सकता है।''**

सचमुच, धीरे-धीरे हम देखेंगे कि विचार करने की आवश्यकता नहीं है और पीछे की ओर से अथवा ऊपर से कोई चीज सारा काम कर डालती है, और ज्यों ज्यों हम उससे संपर्क में रहने की आदत बनाते जाते हैं, उसकी क्रिया अधिकाधिक सूक्ष्म और अमोघ होती जा रही है। याद रखने की भी जरूरत नहीं रही, अपेक्षित समय पर ठीक संकेत आ जाता है।

अपने काम की योजना बनाने की भी कोई आवश्यकता नहीं, उस विषय में हमारे कुछ सोचे या संकल्प किये बिना ही एक गुप्त कमानी उसे चालू कर देती है और हमें ठीक-ठीक जो करना चाहिए, वही इतनी बुद्धिमत्ता और पूर्वज्ञान के साथ कराती है जिनके लिए सदा संकीर्ण दृष्टि वाला हमारा मन नितान्त अयोग्य है।

और हम देखेंगे कि जितना अधिक हम उन आकस्मिक, विद्युत् सदृश सुझावों पर चलेंगे, उतने ही वे जल्दी-जल्दी आने लगेंगे, अधिकाधिक स्पष्ट, अनुपेक्षणीय और स्वाभाविक होने लगेंगे। कुछ-कुछ अन्तर्ज्ञान की प्रक्रिया के समान ही काम करेंगे, पर उसमें यह भारी अन्तर होगा कि हमारी अन्तःप्रेरणा लगभग सदा ही धुंधली, और मानस द्वारा विकृत होती है – मानस तो वैसे भी उनकी नकल करने में और अपनी विचित्रताओं को हमें ईश्वरीय संदेश मनवाने में अत्यंत कुशल है-परन्तु इसमें संप्रेषण स्पष्ट, नीरव तथा यथार्थ होगा, कारण स्पष्ट ही है कि मानस अब मूक हो गया है। यह अनुभव तो हम सब को ही हुआ है कि समस्याएँ 'रहस्यपूर्ण तरीके से' स्वप्नावस्था में हल हो गईं यानी विचार की मशीन जब बंद हो गई, ठीक तब। निस्संदेह बहुत-सी भूल-चूक और ठोकरों के बाद ही नई कार्यप्रणाली किसी हद तक असंदिग्ध बनकर जम सकेगी, पर साधक को अनेक बार धोका खाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

असल में वह देख लेगा कि हमेशा भूल तभी होती है जब मन टाँग अड़ाता है। हर बार जब मन हस्तक्षेप करता है तो सब गड़बड़ा देता है, छिन्न-भिन्न कर डालता है और सर्वत्र बाधा देता है। फिर बार-बार भूल करके, फिर-फिर वही अनुभव लेकर एक दिन हम सदा के लिए समझ जायेंगे और साक्षात् देख लेंगे कि जैसे श्रीमाँ कहती है, मानस ज्ञान-प्राप्ति का साधन नहीं,

www.the-comforter.org

बल्कि केवल ज्ञान का आयोजक है, और ज्ञान का स्रोत अन्यत्र है।' मानस की नीरवता में शब्द, वचन, कर्म, सब स्वतः आश्चर्यजनक यथार्थता और वेग के साथ आते हैं। सचमुच वह जीने का एक दूसरा, बहुत ही सहज तरीका है क्योंकि वास्तव में जो भी मन करता है उसमें कुछ भी ऐसा नहीं जो मानसिक निश्चलता और निर्विचार शान्ति में न हो सके, और ज्यादा अच्छा न हो सके।

अभी तक हमने साधक की प्रगति का अन्तर्सम्बन्धी परीक्षण किया है परन्तु यह प्रगति बाह्य स्तर पर भी उसी तरह चरितार्थ होती है। वैसे तो अन्तर-बाह्य के बीच की दीवार अधिकाधिक पतली पड़ती जाती है। वह दिन ब दिन एक ऐसी अयथार्थ परिपाटी मात्र ही लगने लगती है जिसे अपने आप में फंसे हुए, अपने सिवा कुछ भी देखने में असमर्थ, अपरिपक्व मानस ने स्थापित कर रखा है। साधक महसूस करेगा कि धीरे-धीरे इस विभाजन की कठोरता कम होती जा रही है।

वह अपनी सत्ता के तत्त्व में एक तरह का परिवर्तन अनुभव करेगा, मानो वह पहले से ज्यादा हल्का, पारदर्शी, यदि अत्युक्ति न हो तो अधिक शिथिल बनता जा रहा है। यह सत्त्व-संबंधी अन्तर शुरू में अप्रिय लक्षणों द्वारा प्रकट होगा क्योंकि साधारण मनुष्य सामान्यतया एक मोटी चमड़ी के अन्दर सुरक्षित रहता है, पर साधक को अब यह संरक्षण प्राप्त न होगा। लोगों के विचार, उनके संकल्प, उनकी इच्छाएँ बिना किसी लाग-लपेट के, वह ग्रहण करेगा; जो कुछ वे दरअसल हैं, यानी आक्रमण, उस पर आकर पड़ेंगे। और यह ध्यान देने की बात है कि केवल 'बुरे विचार' या 'दुर्भावनाएँ' ही उस हमले में भाग नहीं लेते। सत्संकल्पों, सद्भावों, परोपकार भावना से बढ़कर घातक और कुछ नहीं है - इस ओर भी, उस ओर भी, मधुरता द्वारा अथवा बल द्वारा, मनुष्य का अहंकार ही है जो पुष्ट होता है। हम केवल ऊपरी तल पर ही सभ्य हुए हैं, नीचे आदमखोर बसता है।

अतः यह बहुत ही जरूरी है कि साधक के पास यह पराशक्ति हो जिसके बारे में हम बता चुके हैं-इस शक्ति के साथ वह सर्वत्र जा सकता है-असल में सार्वभौमिक बुद्धिमत्ता ऐसी ही है कि पारदर्शिता अपने अनुरूप रक्षा के साहचर्य बिना आयेगी भी नहीं। अपनी पराशक्ति और मानसिक नीरवता से लैस साधक क्रमशः देखेगा कि बाहर से वह अप्रवेश्य नहीं है, वह ग्रहण भी करता है, सब तरफ से ग्रहण करता है - दूरी अवास्तविक रुकावट ही है, दूर कोई भी नहीं है, चला भी कोई नहीं गया। सब कुछ एकत्र एक ही काल में है- और दस हजार किलोमीटर की दूरी से वह अपने मित्र की चिन्ताओं, व्यक्ति के क्रोध, भाई की पीड़ा को साफ प्राप्त कर सकता है।

साधक को किसी स्थान पर अथवा किसी व्यक्ति पर अपना ध्यान टिका देने भर से ही वस्तु स्थिति का लगभग ठीक ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। उसकी मानस को नीरव करने की क्षमता के अनुसार उसका ज्ञान कम या अधिक सही होगा क्योंकि यहाँ भी गड़बड़ मन ही करता है - उसकी इच्छा है, भय है, संकल्प है और कुछ भी

www.the-comforter.org

मानस तक नहीं पहुँच जाता जो तुरंत ही इस इच्छा, भय, संकल्प द्वारा दूषित न हो जाये ( ज्ञान को धुन्धला करने वाले और भी तत्त्व हैं। उनके बारे में हम आगे बतायेंगे )। अतः मालूम होता है कि मानस को नीरव करने से चेतना विस्तृत हो जाती है और जो कुछ उसके लिए जानना आवश्यक हो, उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह इच्छानुसार सार्वभौमिक सत्य के किसी भी बिन्दु की ओर मुड़ सकती है।

परन्तु इस नीरव पारदृश्यता में हमें एक नई बात और पता चलती है जो अपने उपलक्षित अर्थ के कारण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हम केवल यही नहीं देखते कि लोगों के विचार बाहर से हमारे अंदर आते हैं, बल्कि हमारे निजी विचार भी हमारे अंदर उसी मार्ग से-बाहर से-आते हैं। जब हम काफी पारदृश्य बन जायेंगे, तब मानस की निश्चल नीरवता में हम अनुभव कर सकेंगे कि छोटे-छोटे भंवर से आकर हमारे वायुमंडल से टकराते हैं, अथवा मानो धीमे स्पन्दन हमारा ध्यान आकृष्ट करते हों, और यदि क्या है, यह देखने के लिए थोड़ा भी झुकें, अर्थात् यदि हम स्वीकृति दे दें कि इन भंवरों में से कोई एक हमारे अन्दर आ जाये तो हम सहसा अपने आप को किसी विषय पर विचार करते हुए पाते हैं।

अपनी सत्ता की परिधि पर जिसे हमने पकड़ा था, वह अपने विशुद्ध रूप में एक विचार था यों कहें कि एक मानसिक स्पन्दन था जिसे अभी समय नहीं मिला था कि हमारे बिना जाने ही हमारे अन्दर घुस जाये और हमारी निजी छाप लेकर बाहर निकले, ताकि कह सके, 'यह मेरा विचार है'।

विचारों को पढ़ने में कुशल व्यक्ति इस प्रकार दूसरे मनुष्य की भाषा जाने बिना भी पढ़ सकता है कि उसके अन्दर क्या चल रहा है क्योंकि वे 'विचार' नहीं है जिन्हें यह पकड़ लेता है, बल्कि स्पन्दन हैं जिन्हें अपने अन्दर उपयुक्त मानसिक रूप देता है। यह आश्चर्यजनक है क्योंकि यदि हम अपने आप से किसी एक चीज की भी सृष्टि करने में समर्थ होते, चाहे वह एक छोटा-सा विचार ही क्यो न हो तो हम संसार भर के स्रष्टा हुए होते।

श्रीमाँ पूछती थीं, तुम्हारे अन्दर वह ''मैं'' कहाँ है जो यह सब रच सके ? खाली साधारण आदमी देख नहीं सकता कि यह किस तरह से चलता है, क्योंकि एक तो वह निरन्तर कोलाहल के बीच रहता है, दूसरे स्पन्दनों को अपना लेने की क्रिया की यंत्रावली प्रायः तत्कालिक, स्वचालित होती है।

अपनी शिक्षा के, अपने सामाजिक वातावरण के अनुसार, सार्वभौमिक मानस में से सदा के लिए एक खास तरह के पर काफी संकीर्ण दायरे में, अपने स्वभाव से मेल खाते हुए स्पन्दन चुन लेने की मनुष्य को आदत पड़ गई है और अपने जीवन के अन्त तक वह तरंगों की उसी एक लंबाई को पकड़े रहेगा, उस एक ही तरह के स्पन्दन को कभी कम कभी ज्यादा जोशीले शब्दों में और लगभग नए तरीके से बार-बार प्रस्तुत करता रहेगा - वह पिंजरे में ही घूमता रहता है, घूमता रहता है। हमारी शब्दावली का कम या अधिक प्रभावशाली विस्तार ही केवल हमें भ्रम में डाल सकता है कि हम प्रगति कर रहे हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# सिद्ध-योगियों की महिमा

**साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।**

इस घटना ने लल के सिद्ध होने की पुष्टि कर दी। गाँव के लोग भी उसे एक संत मानकर उसे श्रद्धा तथा आदर की दृष्टि से देखने लगे तथा उसके दर्शनों के लिए आने लगे। अब धीरे-धीरे आस-पास के गाँव में लल के चमत्कार की चर्चा होने लगी, भक्तों की भीड़ उमड़ने लगी, किन्तु यह प्रसिद्धि लल के मन को कैसे भा सकती थी।

वह एक सच्ची साधिका थी। वह जानती थी कि यह प्रसिद्धि अध्यात्म में उन्नत होने के मार्ग में महाविघ्न है। लोकेषणा की वासना ने बड़े-बड़े साधकों को निगल लिया है। इससे बचकर रहना ही साधन तथा साधक के हित में है। अतः लल ने गृह-त्याग का निश्चय कर लिया तथा जंगलों, बीहड़ों, पर्वत-शिखारों, नदी किनारों, गिरि-कन्दराओं तथा उजाड़ पड़े खण्डहरों के शान्त एकान्त वातावरण में विचरण करने लगी। उसके अन्तर में प्रेम तथा विरह की ज्वाला धधकती थी।

हृदय में प्रतिक्षण प्रभु-प्रियतम का स्मरण बना रहता। कभी अपनी मस्ती में वृक्षोंलताओं से झूमती-लिपटती, इधर-उधर डोलती रहती तो कभी किसी पत्थर पर, किसी वृक्ष की छाया में, किसी नदी-झरने के किनारे, किसी खण्डहर की टूटी दीवार की ओट में बैठ कर ध्यान मग्न हो जाती या तो वन के पशु-पक्षी उसके साथी थे अथवा कभी अकेले में ही अपने आप से बात कर लेती।

सामान्यतया ऐसी मान्यता है कि लल वस्त्रहीन नग्न घूमा करती थी। यह मान्यता संभवतया उसके इस कथन से बनी, 'गुरु ने मुझे यह उपदेशात्मक वचन कहे कि अब तू बाहर से अन्दर की ओर जा' तभी यह उपदेश मेरे हृदय रूपी घर में घर कर गया। मैंने वस्त्र फेंक दिए तथा भावविभोर होकर नाचने लगी। 'भावविभोर होकर नाचने लगी' को सामान्य शाब्दिक-अर्थ में स्वीकार करने में हमें संकोच है।

संत प्रायः सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया करते हैं। इस वचन का संबंध शारीरिक नग्नता अथवा नृत्य से नहीं अपितु लल की आन्तरिक अवस्था का सांकेतिक वर्णन है। जब लल ने गुरु के उपेदश के अनुसार चलते हुए बाह्य जगत् से मुँह मोड़कर, अन्तर

www.the-comforter.org

की यात्रा आरंभ की तो चित्त पर पड़े संस्कारों-विकारों के, वासनाओं- कामनाओं के, संशयों-भ्रमों के जितने आवरण लपेट रखे थे, सब उतरते गए। यही वस्त्र उतार कर फेंकने का भाव है। उसका चित्त निर्मल होता गया। मन प्रभु-प्रेम के अपार वेग में झूम उठा। सुर-ताल सब अन्दर से ही उठने लगे। हृदय थिरक उठा। चारों ओर आनन्द व्याप्त हो गया। यह भाव-विभोर होकर नाच उठने का अर्थ तथा भाव है।

आन्तरिक-स्थिति जो कि बाह्य कर्मों तथा घटनाओं का मुख्य आधार है, पर भक्ति मार्ग में विशेष ध्यान रखा जाता है। लल की सभी कविताओं तथा वचनों में आन्तरिक आधार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

यह ठीक है कि परम्परागत रूढ़िवादिता, आडम्बरपूर्ण निष्ठाएँ एवं प्रचलित कर्मकाण्ड के लल एकदम विपरीत विचार रखती थी किन्तु फिर भी सामाजिक आचार-विचार तथा मर्यादा-पालन के एकदम विरुद्ध भी नहीं थीं। शील रक्षा पर उसकी पूर्ण आस्था थी। उसका नितान्त नग्न रहना तथा उसी अवस्था में नाचते फिरना समझ में नहीं आता। हां ! प्रभु-प्रेम के स्वाभाविक आवेश में कभी वह नाच भी उठती होगी तो यह मानने योग्य बात है।

इन मान्यताओं तथा विश्वासों की भी वह विरोधिनी थी कि अमुक जाति को आध्यात्मिक ज्ञान एवं साधनाओं का अधिकार है तथा अमुक जाति को नहीं। वह मानव मात्र को, बिना किसी भेदभाव के ईश्वर-शरण ग्रहण करने, ज्ञान संचय करने, भक्ति भावनाओं को उदय करने तथा उसके लिए प्रयत्नशील होने का अधिकारी समझती थी। इस बात की पुष्टि के लिए उसका कहना था कि जितने संत उच्चवर्णों में हुए हैं उससे कम छोटी जातियों में नहीं हुए। इसलिए उसने अपने काव्य की रचना काश्मीर की एकदम गंवारू भाषा में करना ही अधिक उपयुक्त समझा, ताकि उसकी वाणी तथा विचार निम्नतम जन समूह तक पहुँच सकें तथा वह लोग उसे समझ भी सकें। काश्मीर में लल की रचनाएँ सामान्य वर्ग तक पहुँच कर, साधारण लोगों को सुलभ भी हुई तथा सर्व-साधारण ने उसका भरपूर उपयोग भी किया तथा लाभ उठाने का यत्न भी।

वैसे यह लिख देना भी उपयुक्त होगा कि लल ऐसी कवयित्री नहीं थी जो केवल बौद्धिक-विलास करती हुई, अपने प्रयत्न से काव्य रचना करती। उसकी कविताओं में अनुभव का आधार था प्रभु-प्रेम का सम्मिश्रण था । भावुकता की मादक गंध थी, जन-कल्याण की भावना की अनोखी छटा थी एवं स्वभाविकता का मधुर प्रवाह था। प्रभु-प्रेम के आवेश में उसके मुख से काव्य-प्रवाह स्वयमेव निकलता था। काव्य रचना उसका अपना अभिमानपूर्वक कर्म नहीं था अपितु जाग्रत शक्तिकी एक क्रिया थी। ऐसा

www.the-comforter.org

कहा जा सकता है कि लल का काव्य उसके आन्तरिक भावों का बाह्य प्रकटीकरण था। इसमें उसके भावुक हृदय की संवेदनाएँ शाब्दिक स्वरूप धारण कर प्रकट होती थीं।

जैसी कि उस समय की परिपाटी थी, लल की छोटी आयु में ही शादी कर दी गई थी। यद्यपि कई बार उसे अपने पति में पुत्र की छवि दिखाई देती थी तो कभी अपनी सास को सौत के रूप में देखती थी, किन्तु फिर भी वह यथा संभव गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए, सास-ससुर की यथायोग्य सेवा करती थी। किन्तु उसका अन्तर्मन प्रभु-प्रेम में ही निमग्न बना रहता था । पानी के घड़े वाली घटना के पश्चात् वह पूर्णरूपेण वैरागिनी, गृह-त्यागिनी तथा प्रभु-अनुरागिनी होकर विचरने लगी थी।

www.the-comforter.org

लल का अन्तर्मन इतना सूक्ष्म, निर्मल तथा स्वच्छ था कि उसे अपने बारबार के जन्म-मरण तथा जीवन की स्मृति हाथ पर रखे गुलाब-पुष्प की भाँति प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती थी। अतीत के कई जन्म उसके समक्ष प्रत्यक्ष थे, जिस प्रकार चलते समय जहाँ तक नजर जाती है आगे का पथ दिखाई देता है उसी प्रकार भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का भी उसे पूर्वाभास था।

जब उसने कहा कि मैंने सरोवर को सात बार महाशून्य में विलीन होते देखा तो इससे लल की आन्तरिक मानसिक अवस्था प्रकट होती है। यह वचन भी प्रतीकात्मक ही है। जीवन एक सरोवर की भाँति कई-कई सीमाओं में निबद्ध होता है।

जब कि मृत्यु के पश्चात् की अवस्था को महाशून्य की संज्ञा दी जा सकती है। प्रत्येक जीवन मृत्योपरान्त महाशून्य में विलीन हो जाता है। महाशून्य में से जन्म होने पर पुनः जीवनरूपी सरोवर प्रकट होता है। महाशून्य पुनः सीमाओं में बंध जाता है। यह क्रम अनवरत रुप से चलता रहता है। संसारी जीव सदैव ही इस क्रम से डरे-सहमे रहते हैं, जीवन भर मौत का साया सिर पर मण्डराता दिखाई देता रहता है। किन्तु प्रबुद्ध योगीजन जन्म-मरण के रहस्य, सार, तत्त्व एवं महत्त्व को समझते हैं। उनके समीप माया का यह केवल दिखावटी खेल है। यह खेल जीव को अपने में उलझाए, भरमाए तथा डराए रखता है। यह खेल जीव को प्रभु-प्रियतम से विलग बनाए रखने का कारण है। सारा संसार ही जन्म-मरण के चक्र में घूम रहा है।

क्रमशः अगले अंक में...

# उन्मुक्त जीवन या सालों की दासता

आज तक धर्म और अध्यात्म के नाम पर किसी न किसी प्रकार का बाहरी बधंन ही देखा है जीवन में। शुरू से धर्म और अध्यात्म में रूचि और जिज्ञासा होने के कारण बहुत जगहों पर उसे तलाशा। हर जगह कोई न कोई बाहरी आडम्बर और क्रिया कलाप ही मिला। ये बाहरी आडम्बर, या बाहरी क्रिया कलाप हमें बांध लेते हैं। शुरू-शुरू में इन क्रिया कलापों से बंध जाने पर हम उत्साहित होते हैं, कुछ नया घटित हो जाने की उम्मीद रहती है, पर जैसे-जैसे दिन, महीने और साल बीतते जाते हैं, ये शरीर के द्वारा की जाने वाली यांत्रिक क्रियाओं के अलावा कुछ नहीं रह जातीं। कोई भाव भी नहीं रह जाता, व्यक्ति यंत्रवत इसे करता जाता है- कभी भगवान के रुष्ट होने के डर से और कभी इस चाह में कि इसे करने से एक दिन सब अपने मन मुताबिक हो जाएगा पर असल में वो एक पिंजरे से निकल कर मात्र दूसरे पिंजरे में कैद ही हो जाता है। उसे पंख नहीं मिलते, उसे उड़ान नहीं मिलती।

www.the-comforter.org

अफसोस ! हम जीवन भर इन्हीं बंधनों में रहते हुए भी समझ नहीं पाते कि अपनी व्यक्ति गत आध्यात्मिक यात्रा के लिए भी हम बाहर दूसरों पर आश्रित रहते हैं।

जब गुरुदेव जीवन में आये तो ऐसा लगा जैसे जीवन में पहली बार पंख

मिल गए। गुरुदेव की साधना इतनी सरल और सहज है कि यह सारे बंधनों से हमें मुक्त कर देती है। कारण यह है कि ये आध्यात्मिक यात्रा केवल और केवल गुरु और शिष्य के बीच की है। इसमें अन्य किसी भी व्यक्ति की जरूरत ही नहीं है। केवल गुरुदेव का आदेश मानने मात्र से यह साधना स्वतः योग करवा देती है, अपने अन्दर की शक्ति से पहचान करवा देती है, ईश्वर के साक्षात्कार करा देती है।

हम बेकार ही पुरानी आदतों से मजबूर होने के कारण तीसरे को ढूंढते रहते है- कभी सोशिल मिडिया पर, कभी वाट्सएप के ग्रुपों में और ना जाने कहाँ-कहाँ। जैसे सालों की दासता के कारण हम फिर से कोई बंधन ढूंढ रहे हों, जैसे वो बंधन ही हमें सुरक्षित महसूस करवाता हो।

गुरुदेव ने स्पष्ट कहा है कि इस साधना में सारे परिवर्तन केवल संजीवनी मंत्र जाप और उनकी तस्वीर के ध्यान करने मात्र से आएगा। वो कहते हैं- "आप को और कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। बाहर से किसी से कुछ भी उम्मीद रखने की जरूरत नहीं है। इस आराधना में आपको जो भी मिलेगा आप के अन्दर से मिलेगा।

"हमारे गुरुदेव ने हमें किसी बंधन में नहीं बांधा है- ना ही रंगें हुए कपड़ों में, ना तिलक छापे में, ना ही भजन साधना में, ना ही सामूहिक सत्संग में, ना ही सामूहिक ध्यान में। वो तो कहते हैं कि बस आप मुझसे अन्दर से जुड़ो, बाहर से कोई आपको कुछ नहीं दे सकता।

बल्कि गुरुदेव इससे एक कदम और आगे बढ़ कर कहते हैं कि - राम और कृष्ण जैसे अवतारों की तस्वीर से ध्यान नहीं लगता, मेरी तस्वीर से

www.the-comforter.org

ध्यान लगता है। फिर गुरुदेव ने कहा- ''ये शरीर रहे ना रहे पर ये तस्वीर नहीं मरेगी..... कभी नहीं मरेगी। ये आपको जवाब देगी, आपके अन्दर से।'' यह हम सबका परम सौभाग्य है कि ऐसे समर्थ सद्गुरुदेव ने हमारे जीवन की बागडोर संभाली हुई है। फिर हमें अपना सब कुछ उन्हें सौंप कर निश्चिन्त हो जाना चाहिए।

बेकार की दिमागी कसरत की आदत से मजबूर होकर इस सरल साधना को बेवजह जटिल करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से कुछ नहीं प्राप्त होगा।

इस साधना में आप गुरुदेव से अन्दर से जितना अधिक घनिष्ठ संबंध बनाएंगे उतना अधिक आपकी साधना फलित होगी।

सभी साधकों को इस बात के सतर्क रहना चाहिए कि कहीं वो जाने-अनजाने वर्षों की पुरानी आदत से मजबूर हो कर, फिर से कहीं बाहर किसी बंधन को तो नहीं तलाश रहे हैं- किसी व्यक्ति की मीठी-मीठी बातों में, किसी वाट्सएप ग्रुप की चर्चाओं में, किसी और ऐसी ही सामूहिक दिनचर्या में? हमें सिर्फ और सिर्फ अपने प्रियतम, अपने सर्वस्व, अपने स्वामी- अपने पूज्य गुरुदेव से जुड़ना है।

-साधक

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# रूपान्तरण (Transformation)

**''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''**

प्रथम काल का यहाँ अंत होता है। श्री अरविन्द और श्रीमाँ चेतना की शक्ति की सच्चाई परख चुके थे और उन्होंने देख लिया था कि इन सब 'विधिपूर्ण चमत्कारों' अथवा चेतना की उच्च शक्तियों के हस्तक्षेप से यह कटु जीवन मनोहर भासने लगता है, पर उसकी वास्तविक स्थिति में कुछ भी अंतर नहीं पड़ता। पृथ्वी के रूपांतर की सृष्टि से वे बिल्कुल निरर्थक रहते हैं।

वस्तुतः समस्या, श्रीमाँ के अनुसार असल चीज, 'अलौकिक' कहलाने वाले अस्थायी हस्तक्षेपों द्वारा जड़तत्त्व का बाहर से बदलने की नहीं, अंदर से, स्थायी रूप से बदलने की है। प्रश्न है एक नये भौतिक आधार की प्रतिष्ठा का। अतीत में पहले भी तो पुण्य पीठों की कमी नहीं रही है, पर वे सब विफल ही गए। हम देवी-देवताओं और धर्मों की ध्वजा के नीचे अब बहुतेरा रह चुके। श्री अरविन्द ने कहा है - उसी पुराने दिवालियेपन के एक नये संस्करण के लिए अपनी अनुमति देने का मेरा कोई इरादा नहीं, कि अंदर एक अंश का अस्थायी रूप से आध्यात्मिक उद्घाटन हो जाये और बाह्य प्रकृति के नियम में बुनियादी कोई सच्चा परिवर्तन न हो।

उत्थापन, निद्रा और रोगों तक की भी विजय केवल समस्या की ऊपरी सतह को स्पर्श कर वस्तुओं को परिपाटी के विरुद्ध एक नकारात्मक कार्य है, और चाहे दो रूप में ही क्यों न हो, वह पुराने नियम-विधान को मान्यता प्रदान करता है।

आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के

www.the-comforter.org

साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।

हठात् श्री अरविन्द ने 24 नवंबर सन् 1926 को कह दिया कि वे पूर्ण एकान्तवास ले रहे हैं। श्रीमाँ के निर्देशन में बाकायदा आश्रम बना दिया गया।

साधकों को तो यह बतलाने की भी जरूरत नहीं पड़ी कि अब से योग 'अवचेतन और अचेतन स्तरों में चलेगा' : इन कहीं अधिक दारुण सत्यों से टक्कर लेने के लिए सब के सब अपनी उन परम सुन्दर अनुभूतियों से नीचे आ उतरे। इस प्रकार रूपांतर-कार्य के द्वितीय काल का आरंभ हुआ।

मूलभूत अग्नि इस द्वितीय चरण में पग धरते ही हमें श्री अरविन्द का एक अत्यद्भुत वार्तालाप मिलता है, जो कि एकांतवास ग्रहण करने से ही पूर्व, सन् 1926 में एक फ्रांसिसि वैज्ञानिक के साथ हुआ था।

श्री अरविन्द की कही बातें, जो कि उस समय शायद एक गूढ़ पहेली लगी होंगी, इस चीज पर एक विलक्षण प्रकाश डालती हैं कि उनके अनुभव-प्रयोग किस दिशा में चल रहे थे। बात हो रही थी 'आधुनिक विज्ञान के विषय में।' उन्होंने कहा-आधुनिक विज्ञान ने दो बातें कही हैं जो गुह्यज्ञान गंभीरतर श्रेणियों को उद्वेलित कर दे सकती हैं ;

१ ) अणु भी सौर जगत् की तरह अति वेग से घूर्णन करने वाले निकाय हैं। २ ) सभी तत्त्वों के अणु, एक ही समान घटकों से निर्मित हैं।

www.the-comforter.org

रचनाक्रम की विषमता ही उनके गुण-धर्म की विशिष्टता का एकमात्र कारण है। यदि इन दोनों वक्तव्यों को इनके सत्य रूप में परखा जाये तो ये विज्ञान को उन खोजों की ओर ले जा सकते हैं जिनकी आज उसे कल्पना तक नहीं, और जिनकी तुलना में आज का ज्ञान कुछ अधिक मूल्य नहीं रखता। यह बात है 1926 की।

श्री अरविन्द ने आगे कहा - प्राचीन ऋषियों की अनुभूति के अनुसार अग्नि के तीन रूप हैं :- 1. जड़ अग्नि - साधारण अग्नि 2. वैद्युत् अग्नि - बिजली की आग 3. सौर अग्नि . .. सूर्यसंबंधी आग विज्ञान को अभी इनमें से पहली दो तक ही पहुँच है। तीसरी अग्नि के बारे में अभी विज्ञान को जानकारी नहीं है। अणु का सौर-जगत् के साथ सादृश्य होना उसे तीसरी की जानकारी तक ले जा सकता है।

श्री अरविन्द का क्या अभिप्राय था ? और पहले तो यही किस प्रकार हुआ कि हमारी सब प्रयोगशालाओं से भी पूर्व उन्हें ( छह हजार वर्ष पहले के ऋषियों की बात छोड़िये ) पता चल सका कि सूरज के ताप - सौर अग्नि - का उद्भव उससे भिन्न है जिसे हम आग या बिजली कहते हैं, यानी वह न्यष्टिसंयोग से उत्पन्न होता है, और सौर ऊर्जा में उसी प्रकार की शक्ति है जैसी कि हमारे अणुओं में भरी है ? यह एक तथ्य है जो कि-विज्ञान के लिए परेशानी का कारण हो सकता है, क्योंकि विज्ञान केवल ठोस तथ्यों के आधार पर ही अपने निर्णय करता है-हमारे भौतिक जगत् की सब वस्तुओं के, चाहे वे कोई भी हों, आन्तरिक रक्षा वस्त्र के रूप में, अंतर्सत्ता है, जो उनका कारण और आधार होता है। छोटे से छोटा, कोई भौतिक तत्त्व तक ऐसा नहीं जिसका आंतरिक प्रतिरूप विद्यमान न हो। अपने शरीर के अंगों को ही देखें, जो कि चेतना केन्द्रों का भौतिक प्रतिरूप व आलंब मात्र हैं।

यहाँ नीचे धरती पर जो कुछ भी है सब, पीछे की ओर स्तर पर विद्यमान प्रकाश अथवा शक्ति की बाहर पड़ती हुई छाया या प्रतिकात्मक रूपांतरण है। यह सारा संसार ही एक विराट, दिव्य प्रतीक है। विज्ञान दृश्य व्यापारों का विश्लेषण करता है। केन्द्राकर्षण, गुरुत्व, परमाणु-विस्फोट, आदि को समीकरण सूत्रों में बाँधता है, पर वह केवल कार्य को ही स्पर्श करता है, कभी सच्चे कारण तक नहीं जाता।

क्रमशः अगले अंक में...



www.the-comforter.org

# ध्यान कार्यक्रम का आयोजन

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र, जोधपुर की शाखा कोटा द्वारा दिनांक 01 मार्च 2021 को कोटा ग्रामीण पुलिस लाइन मीटिंग स्थल पर पुलिस के समस्त स्टाफ को गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग के बारे मे जानकारी दी गई एवं सभी को 15 मिनट का ध्यान भी कराया गया। उक्त ध्यान कार्यक्रम में, अधीक्षक पुलिस कोटा ग्रामीण, अतिरिक्त अधीक्षक पुलिस कोटा ग्रामीण एवं सेवानिवृत अतिरिक्त अधीक्षक पुलिस ने भी अन्य साधकों सहित भाग लिया।

# What is salvation? Why is it necessary to attain it?

-Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag
(14th Feb' 1988)

continuing from the last edition...

www.the-comforter.org

..... The laboratories have always progressed in the field of Physical Science and new inventions are made through research work and the principles of new inventions have been noted down. This is the reason that Physical Science is about to reach its ultimate limit. Exactly contrary to this, almost all the laboratories of Spiritual Science, due to not being able to maintain a balance with the wheel of time, have been completely destroyed. At this time, all the religious preachers of the world only have the books of the scientists of the ancient Spiritual Science. In the absence of laboratories, all these scriptures are meaningless.

Only theoretical texts, by keeping this knowledge alive, will not be able to benefit mankind. So, until this Science is not promoted by testing through research, no benefit can be derived merely by memorizing these texts like a parrot because the treasure of all the knowledge is hidden within the man. The reason for all the progress made by Physical Science to date is the inspiration and efforts made by the man. So, Spiritual Science will have to be found by man only by being introverted. Physical Science can give only physical pleasures to man. These pleasures are temporary and transient. Permanent happiness and peace are impossible to attain through these. Until Spiritual Science

progresses as much as Physical Science has progressed, the prediction made by Maharishi Aurobindo about "heaven descending on earth" will not come true.

Physical Science is the outcome of outer consciousness and contrary to this, the realization of spiritual powers is possible only by introverted spiritual practice. Physical Science is the product of these spiritual powers so, until this power, brings this scientific power which is born from it, under its direct control and starts governing it, the prediction made by Maharishi Aurobindo will not come true. Only Spiritual power is capable of restricting the destructive play of Physical Science and rest all other solutions are completely meaningless. Man is incapable of curbing this destructive play by his intellectual skills. The artificial peace mission run by the religious leaders is not going to be effective.

Physical Science is a truth. It will never obey the order of any lies. Until its birth giver reveals itself and satisfies this power with full proofs, it will not obey anyone. So, until man of the world by becoming introverted, walks through the path that leads to that Supreme Power, realizes Him, peace is impossible. This way, the moment, man of the world connects with that Supreme Power, these physical powers will stand with folded hands in front of him and will serve mankind by becoming its slave.

www.the-comforter.org

India is the caretaker of the heart of the world. That is why only through the people who are born on this land, that Supreme Power will make the world aware of its power and establish peace. Our saints have clearly described the path that leads to that goal. It is possible to reach by the path of renunciation (Sannyasa Marg) and by the path of devotion (Bhakti Marg). The Bhagwat Geeta clearly says that the path of 'Sannyasa' is very difficult but by walking on the principle of 'Nishkaam karma yoga'

(working without expectation) and with devotion, this love-filled man certainly unites with that Supreme Power without any trouble.

Six Chakras are described in the human body. A Yogi starts from the 'Mooladhar chakra'. This way after piercing the sixth chakra, he can cross the field of Maya (the illusory power of God). This chakra is also known as 'Agyachakra' because all the powers of the lower world of Maya work under the order of the power which is above the 'Agyachakra', that is why it has been called 'Agyachakra'. All the powers of Maya up to the Sixth Chakra are so strong that none of them let the being to cross their boundary. That is why to reach the goal through this path in this age, looks not only difficult but also impossible.

But by walking on the principle of 'Nishkaam Karma Yoga', by loving devotion to God, the being easily reaches his goal without any problems. That is why, pronouncing this path as the best in the Bhagwat Geeta, it directs to walk on this path. Due to lack of knowledge, the religious teachers of this age while describing this path have created so many complexities that the man has remained entangled in them. Sin, virtue, charity, sacrifice, austerities, religion etc. have been described in such a wrong way that man remains entangled in illusions.

Based on rituals, ostentation, jargon, superstition and logic, such a face of spirituality is shown that he cannot find the right path. This is the reason that such an easy work became impossible and, in this way, people lost faith in religion. In the absence of results, this is the condition of every work. Why will anyone do meaningless work? So, the religious teachers of different religions are at fault for the loss of faith in religion by the people of the world of this age. They made religion a means of livelihood. This way when exploitation, injustice and

www.the-comforter.org

atrocities crossed its ultimate limit under the guise of religion, people revolted. It is very saddening to see this condition of religion. In spite of all this, the religious teachers are not taking pity. Even today they are applying new tactics to rob people.

If a true spiritual master is found, the darkness disappears very fast. I have already described a true Guru. Since a true spiritual master is in direct contact with the Supreme Power that is why the illusory power (Maya) of the world becomes a slave and stands with folded hands in front of him. A being that connects with such a Guru gets freed from the effects of 'Maya' spontaneously. This way by Guru's grace, piercing the 'agyachakra', he starts his journey because by Guru's grace he gets freed from the entanglements of 'Maya' unintentionally and enters the attractive boundary of the Supreme Power and this way he meets only helpful powers on his path ahead. As he progresses, attraction increases and the speed of his progress also increases. The distance of time cannot affect the human being in these spiritual regions so it doesn't take much time to connect with the Supreme power. The obstacles exist only up to 'Agyachakra'. By connecting with a true Guru all the obstacles vanish. This way by connecting with that Supreme Power, the human being is freed from the cycle of birth and death.

www.the-comforter.org

There are mainly three regions (Lokas) beyond 'Agyachakra'- 'Satlok', 'Alakhlok' and 'Agamlok'. The human being merges with the Supreme Power after reaching the 'Agamlok'. Here bliss and peace

stays eternally. The world created by Maya is seen because the organisms of the world are operated by Maya and hence are not able to see it. Only the inner vision is capable of seeing it.

As the being progresses spiritually, the lower 'Lokas' and their powers can be clearly seen. Human body is divided into three parts- Physical body, Subtle body and Causal Body. Causal Body has the entire record of the present life from birth till death. The future life incidents can be seen by man like TV scenes after entering the causal body.

All these three bodies are within the limit of Maya (illusory power of God), consisting of three attributes.

The soul lies within it. The Super soul is a mass of power whose brilliance is much more than billions of suns. Its one ray is called a soul because it is part of that complete Supreme Power so there is no difference between 'soul' and Super soul. Once a human being realizes the soul then with its support, he reaches its original place that is Super soul. It is not possible to realize God in the field of Maya. That is why without piercing the 'Agyachakra', this job is impossible. Physical body, Subtle body and the Causal body and soul and the Super soul are merged with each other in such a way that it is impossible to see them separately. For example: sugarcane has two parts. The inner part has juice hidden within it. But only the outer hard part is visible. When pressed the juice comes out. By looking at the juice, we cannot know its taste. That it is sweet can be known only after tasting it. God is the power that gave the sweetness to that juice. This way the three parts up to the juice are like the three parts of the body. The sweetness within it is the soul and the power because of which this sweetness has come is Super soul. We cannot know the things within

www.the-comforter.org

the sugarcane by merely looking at it. This example is just an effort to help you understand. The truth is a subject of direct realization. Its knowledge can be gained by testing it in the laboratory of spiritual knowledge.

When religion disappears from the world, immorality becomes prevalent and the 'Tamas' (dark forces) sets in the world firmly, at that time, the human being through whom the Supreme Power spreads its divine pure light, is the true Guru. Only one true Guru is capable of removing the darkness from the entire world. From this it can be understood, what a Guru is. That is why all the scriptures of Hindu religion have said that the glory of Guru is beyond description.

Physical pleasures are temporary and are a play of Maya to confuse. The things which give pleasure in childhood don't give in teenage. Some other things are the reason for happiness in youth and some other things give a sense of pleasure in adulthood. The situation changes again in old age. In the last stage of his life, man deeply regrets that he wasted the human life for false pleasures. The description made by C. Rajagopalachari in his last moments about these pleasures is very apt. The real pleasure stays the same at all times. That pleasure can be attained only by connecting with the Supreme Power. So, the man should always make efforts to seek the truth. God is always ready considerately to hold him by his hand. After reaching such a stage, it is possible to unite with the Supreme Power by crossing the ocean of life with slight efforts. This kind of bliss and peace is eternal. Once a man attains it, he stays in this state eternally and gets freed from the cycle of birth and death. This state is known as salvation.

-By Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag
14th Feb' 1988.

www.the-comforter.org

# सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

गुरुवार १० मार्च चैत्र बदी ७ वि. २७ फाल्गुन सं. २०००

जहां ईश्वर की चर्चा होती है वहीं स्वर्ग है।

भेद बुद्धि के भ्रम के कारण ही आलोचना प्रत्यालोचना होती है।

मैंने जो कुछ पिछले पृष्ठों में लिखा है वह पूर्ण रूप से मेरी प्रत्यक्षानुभूति पर आधारित है। इस समय संसार में आध्यात्मिक जगत में जो वस्तुस्थिति चल रही है, उसका और सच्चाई का तुलनात्मक वर्णन करने के लिए मुझे विवश होकर आलोचनात्मक शैली का सहारा लेना पड़ा। यह मात्र समझाने के लिए किया गया प्रयास है। मैं जो कुछ बताना चाहता हूं, उसे फिर भी स्पष्ट रूप से नहीं व्यक्त कर सका हूं। क्योंकि आध्यात्मवाद मात्र प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। सांसारिक भाषा में उसे व्यक्त करना कठिन ही नहीं असम्भव सी बात है। सांसारिक जीवों को उसी की भाषा में समझाने के लिए इस तरीके के अलावा और कोई रास्ता है नहीं। संसार का यह विचित्र स्वरूप मात्र उसी एक परम सत्ता का स्वरूप है। विरोधाभाश और भिन्नता हमें दिखाई दे रही है वह मात्र त्रिगुणमयी माया का खेल है। दुःख सुख की अनुभूति ही जीवन का रहस्य है। जब जीव माया की परिधी से ऊपर उठ जाता है तो उसका भ्रम धीरे २ समाप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में उस महान आत्मा को संसार की हर वस्तु में मात्र उसी परम सत्ता के दर्शन होते हैं। यह एक सच्चाई है। जब संसार एक ही सत्ता का स्वरूप है तो आलोचना कौन करे, किसकी करे। यह सब भेद तो आज्ञा चक्र के नीचे के माया के क्षेत्र में ही महसूस होता है। माया ने जीवों को ऐसा भ्रमित कर रखा है कि किसी को सच्चाई का भान तक नहीं होपा रहा है। अलीपुर जेल में भगवान ने महर्षि अरविन्द को जो दो आदेश दिये थे, उससे स्थिति बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

www.the-comforter.org

# सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

भगवान ने पहले आदेश में श्री अरविन्द को कहा था:—
"मैं ने तुम्हें एक काम सौंपा है। तुम्हें इस राष्ट्र को उठाना है, मैं नहीं चाहता कि तुम अधिक समय तक इस चार दिवारी में बन्द रहो। तुम शीघ्र छूट जाओगे। जाओ और मेरा काम करो।"

दूसरे आदेश में भगवान ने उनसे कहा था:—
"इस एक वर्ष के एकान्तवास में तुम्हें बहुत कुछ दिखाया गया है। जिन बातों के बारे में तुम्हें शंका थी, उनको तुमने प्रत्यक्षरूप से देख लिया है। मैं इस देश को अपना संदेश फैलाने के लिए उठा रहा हूँ, यह संदेश उस सनातन धर्म का संदेश है, जिसे तुम अभी तक नहीं जानते थे, पर अब जान गये हो। तुम बाहर जाओ तो अपने देशवासियों से कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो, तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार के लिए उठाया जा रहा है। जब कहा जाता है कि भारतवर्ष महान है तो उसका मतलब है सनातन धर्म महान है। मैं ने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह और सब में मौजूद हूँ। जो देश के लिए लड़ रहे हैं, उन्हीं में नहीं, देश के विरोधियों में भी मैं ही काम कर रहा हूँ। जाने या अनजाने, प्रत्यक्षरूप से सहायक होकर या विरोध करते हुए, सब मेरा ही काम कर रहे हैं। मेरी शक्ति काम कर रही है, और वह दिन दूर नहीं जब काम में सफलता प्राप्त होगी"। भगवान के उपरोक्त आदेशों से स्थिति पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है। उपरोक्त से स्पष्ट हो गया है कि सर्वत्र एक ही शक्ति की सत्ता है, फिर कौन किसका विरोधी है। मुझे भी संसार में सनातन धर्म के लिए कुछ करने का आदेश है, उसका पावन संदेश संसार के लोगों तक पहुँचाना है। इसी लिए सेवाकाल समाप्त होने से छः साल पहले, सेवा निवृत होने के आदेश दे कर अपने काम में लगा दिया है। मैं एक सेवा छोड़ कर दूसरी सेवा में लग गया हूँ। जो कुछ मुझे करना है, वह पहले से सुनिश्चित है। इस सम्बन्ध में सारी स्थिति मेरे सामने स्पष्ट, मुझे मेरा प्रत्येक पग-पग पर आज भी प्रदर्शित किया जा रहा है। मुझे जो करना है उसके लिए मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ।

[illegible] लाल 22.2.88

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

# योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

जिस मनुष्य में जीवन और उसकी कठिनाइयों का धीरता और दृढ़तापूर्वक सामना करने का साहस नहीं है, वह योग साधना की कहीं अधिक बड़ी आंतरिक कठिनाइयों को पार करने में कभी समर्थ नहीं हो सकता। इस योग की तो एकदम पहली शिक्षा ही यह है कि प्रशांत मन, सुदृढ़ साहस और भागवती शक्ति पर पूर्ण भरोसा रखते हुए जीवन और उसकी सभी परीक्षाओं का मुकाबला किया जाये।

आत्महत्या करना निरर्थक है, इससे प्रश्न का समाधान नहीं हो सकता। उसका यह सोचना सरासर भूल है कि आत्महत्या करने से उसे शांति मिल जायेगी। ऐसा करने से तो वह मरने के बाद अपनी सारी कठिनाइयों के साथ और भी अधिक बुरी अवस्था में पहुँच जायेगा और फिर पृथ्वी पर दूसरा जन्म होने पर उन्हें अपने साथ वापस लेता आयेगा। इसका एकमात्र उपाय यही है कि इन सब दूषित विचारों को दूर फेंक दिया जाये और जीवन के लक्ष्य-स्वरूप किसी निर्दिष्ट कार्य को पूरा करने का एक स्पष्ट संकल्प रखते हुए सुदृढ़ और सक्रिय साहस के साथ

www.the-comforter.org

जीवन का सामना किया जाये।

साधना शरीर में रहकर ही करनी है, शरीर के बिना केवल अंतरात्मा साधना नहीं कर सकता। जब शरीरपात हो जाता है तब अंतरात्मा अन्य लोकों में विचरण करने लगता है और अंत में वह फिर दूसरे जीवन और दूसरे शरीर में वापस आता है। उस समय वे सभी कठिनाइयाँ, जिन्हें उसने पूर्वजन्म में हल नहीं किया था, फिर से नये जन्म में आ जुटती हैं। तब भला शरीर छोड़ने से लाभ ही क्या? - फिर इसके अतिरिक्त, अगर कोई जबर्दस्ती शरीर-त्याग करता है तो वह दूसरे लोकों में बहुत अधिक दुःख भोगता है और जब वह फिर से जन्म ग्रहण करता है तब वह किसी अच्छी नहीं बल्कि और भी बुरी अवस्था में जा पड़ता है। अतएव बुद्धिमानी की बात बस यही है कि इसी जीवन में और इसी शरीर में कठिनाइयों का मुकाबला किया जाये और उन्हें जीता जाये।

सभी योगों में लक्ष्य तक पहुंचना कठिन होता है, फिर इस योग में तो यह अन्य योगों से भी अधिक कठिन है। यह योग केवल उन्हीं लोगों के लिये है जिनके हृदय में इसके लिये पुकार उठी है, जिनमें इसे करने की क्षमता है, जो प्रत्येक चीज का और सब तरह के खतरों का, यहाँ तक कि असफल होने तक के खतरे का सामना करने के लिये तैयार हैं और जिन्होंने संपूर्ण निःस्वार्थता, निष्कामता और आत्मसमर्पण को प्राप्त करने के पथ पर अग्रसर होने का संकल्प किया है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

# धर्म

**भगवान् श्री कृष्ण ने महर्षि श्री अरविन्द को अलीपुर जेल में कहा था-"भारत, धर्म के द्वारा और धर्म के लिए ही अस्तित्व में है।"**

# सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

# क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव ( मानव ) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

# प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

## शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

**( सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण )**

www.the-comforter.org

### ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर ( जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं ) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप ( बिना होंठ-जीभ हिलाए ) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया ( आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम ) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से ( केवल 15 मिनट ) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

### Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

**मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. ) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

# गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।
# अंतर हाथ पसार के, बाहिर मारे चोट।।

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
**Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस**
**अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर ( राज. ) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राजस्थान ) से प्रकाशित।